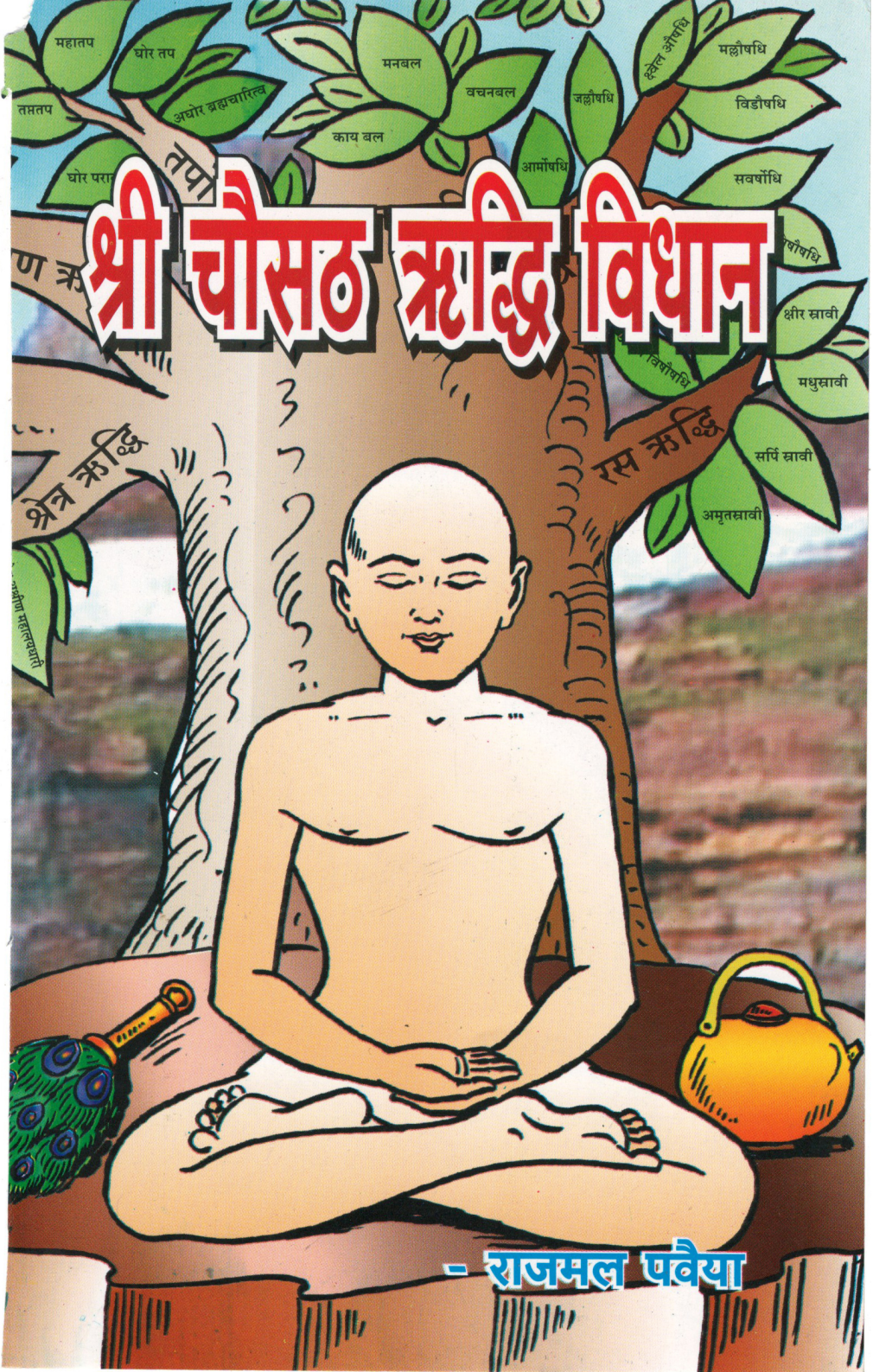

# श्री चौसठ ऋद्धि विधान




- राजमल पवैया

# श्री चौंसठ ऋद्धि विधान

रचयिता

**कविवर राजमल पवैया**

सम्पादक

**डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री, नीमच**

प्रकाशक :

**अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन**

ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

फोन : २७०७४५८, २७०५५८१

**श्री चौसठऋद्धि विधान** : पं. राजमल पवैया
**प्रथम नौ संस्करण** : 14 हजार
(25 अप्रैल, 2000 से अद्यतन)
**दसम् संस्करण** : 1 हजार
(18 सितम्बर, 2015)
पर्यूषण महापर्व
**योग** : **15 हजार**

**मूल्य : आठ रुपये**

मुद्रक :
**सन् एन सन् प्रेस**
तिलकनगर, जयपुर (राज.)

## प्रकाशकीय

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के माध्यम से श्री राजमलजी पवैया कृत चौंसठ ऋद्धि विधान का प्रकाशन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

चौंसठ ऋद्धि विधान का जिनागम में विशेष महत्त्व है। जैन पर्वों तथा अन्य मांगलिक प्रसंगों पर इस विधान को करने की विशिष्ट परम्परा है; इसकारण इस विधान की निरन्तर मांग बनी रहती है।

इस विधान में पंच परमेष्ठी भगवन्तों द्वारा अर्जित चौंसठ ऋद्धियों का विशेष वर्णन है। तपोबल से यह ऋद्धियाँ ज्ञानी-ध्यानी ऋषियों को सहज उपलब्ध हो जाती हैं।

प्रस्तुत कृति के कृतिकार पं. राजमलजी पवैया सिद्धहस्त रचनाकार हैं। उन्होंने शताधिक विधानों की रचना कर कीर्तिमान स्थापित किया है। आत्म-कल्याण की मंगल भावना से उन्होंने प्रस्तुत कृति की रचना की है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

जैनदर्शन के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने इसका सम्पादन कर कृति को गरिमामय बना दिया है। सम्पादन हेतु संस्था की ओर से मैं उनका आभार मानता हूँ।

सदा की भांति कृति का प्रकाशन दायित्व प्रकाशन विभाग के प्रभारी अखिल बंसल ने सम्हाला है। अत: वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

आप सभी प्रस्तुत कृति के माध्यम से भक्ति गंगा में स्नान करते हुए पुण्यार्जन करें, इसी मंगल भावना के साथ

**– परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
**महामंत्री**

ॐ

# श्री चौंसठ ऋद्धि विधान

## मंगलाचरण

अनुष्टुप

दोहा

चामर

परमानन्द स्वरूपोहम्। सहजानन्द स्वरूपोहम्।।
मुक्तानन्द स्वरूपोहम्। नित्यानन्द स्वरूपोहम्।।
ज्ञानानन्द स्वरूपोहम्। नित्यानन्द स्वरूपोहम्।।
पूर्णानन्द स्वरूपोहम्। ब्रह्मानन्द स्वरूपोहम्।।
आत्मानन्द स्वरूपोहम्। चिदानन्द चिद्रूपोहम्।।
ज्ञायकभाव स्वरूपोहम्। त्रैकलिक ध्रुवरूपोहम्।।
ध्रुवचैतन्य स्वरूपोहम्। परम समाधि स्वरूपोहम्।।
त्रिभुवन मंगलरूपोहम्। शाश्वत मंगल रूपोहम्।।

पंचचामर

वीतराग श्री जिनेन्द्र शुद्ध बुद्ध मंगलम्।
गणधरादि सर्व साधु दिव्यरूप मंगलम्।।
सत्य अहिंसा स्वरूप धर्म श्रेष्ठ मंगलम्।
वस्तु का स्वभाव ध्रुव अनाद्यनंत मंगलम्।।
शुद्ध आत्म तत्त्व ही महामहान मंगलम्।
ज्ञान चेतना स्वरूप सर्व जीव मंगलम्।।
साम्यभाव रूप चारित्र भव्य मंगलम्।
आत्म तत्व की प्रतीति ही सदैव मंगलम्।।
एकमात्र ज्ञान ध्यान स्वाध्याय मंगलम्।
मोहक्षोभ से विहीन साम्यभाव मंगलम्।।
शुद्ध स्वानुभव त्रिकाल सुख स्वरूप मंगलम्।
विश्व कल्याणमयी आत्मधर्म मंगलम्।।

# श्री चौंसठ ऋद्धि विधान

## पीठिका

छंद–चान्द्रायण

अरहन्तों सिद्धों को नित वन्दन करूं।
आचार्यों के चरणाम्बुज अर्चन करूं।।
उपाध्याय अरु सर्व साधु को नमन कर।
पांचों परमेष्ठी प्रभु के उर चरण धर।। १।।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं हर्षाय के।
भक्ति सहित वन्दू ऋषि मुनि गुण गायके।।
सम्यक दर्शन पूर्वक संयम धारते।
सर्व कषायों को परिपूर्ण निवारते।। २।।
निज स्वरूप में लीन स्वयं को ध्यावते।
घोर तपस्या रत हो कर्म बुहारते।।
छठे सातवें गुणस्थान में झूलते।
श्रेणी चढ़ते निज स्वभाव में फूलते।। ३।।
ज्ञान ध्यानमय आत्म साधना लीन हैं।
रहते ध्रुव ज्ञायक स्वभाव तल्लीन हैं।।
स्वतः सिद्ध हो जातीं इनको सिद्धियां।
विविध भांति की हो जाती हैं ऋद्धियां।। ४।।
किसी ऋद्धि का भी प्रयोग करते नहीं।
निज स्वरूप तज पर में ये रमते नहीं।।
धर्म ध्यान या शुक्ल ध्यान से हैं जुड़े।
आर्त्त रौद्र तो इनके पहिले ही उड़े।। ५।।
ज्ञायक की महिमा से ओतः प्रोत हैं।
ज्ञान स्वरूपी ज्ञान सिन्धु के स्रोत हैं।।
इन्हें नमन कर इनकी महिमा आ गई।
ध्रुव ज्ञायक स्वभाव की रुचि उर छा गई।। ६।।

भक्ति सहित मैं नमन करूँ वन्दन करूं।
निज स्वभाव साधन से भव बन्धन हरूं।।
ऋद्धि प्राप्त करने का लोभ न हो प्रभो।
निःकांक्षित भावना हृदय में हो विभो।। ७।।
निःशंकित हो मैं प्रभु चरण पखारता
संयम धारण का ही समय निहारता।।
निश्चय संयम पाने का उत्साह है।
अविरति दोष मिटाने की ही चाह है।। ८।।
क्रम क्रम से पुरुषार्थ पूर्वक मैं बढ़ूं।
गुणस्थान चढ़ नाथ क्षपक श्रेणी चढ़ूं।।
मुक्ति प्राप्ति का जागा उर उद्देश्य अब।
धारूं प्रभु निर्ग्रन्थ साधु का वेश अब।। ९।।
भावहीन मुनि क्रिया पूर्णतः व्यर्थ है।
शुष्क आचरण शिव पथ में असमर्थ है।।
विविध ऋद्धिधारी ऋषियों की चरण रज।
रत्नत्रय प्रगटाने में होती सहज।। १०।।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति को प्रगट कर।
शिवसुख पाऊं कर्म शत्रु सब विघट कर।।
इसीलिए करता हूं यह पावन विधान।
निज स्वभाव से पाऊं मैं निजपद महान।। ११।।

*इत्याशीर्वादः*

## पूजन क्रमांक – 1

# श्री चौसठ ऋद्धिधारी समुच्चय पूजन

## स्थापना

दोहा

विनय सहित वन्दन करूं, ऋद्धीश्वर मुनिराज।
भव संकट को टाल कर, पाऊं निज पद राज।

छन्द–तांटक

सभी ऋद्धि धारी मुनियों को, भाव सहित में करूं नमन।
भाव द्रव्य संयममय ऋषिवर, सबकी आज करूं पूजन।।
बुद्धि विक्रिया चारण तप बल, औषधि रस सुऋद्धि अक्षीण।
अष्ट ऋद्धि के चौंसठ भेद समझ कर, करूं कषायें क्षीण।।
पृथक–पृथक मैं अर्घ्य चढ़ाऊं, पृथक–पृथक मैं करूं नमन।
बन चैतन्यराज शिव पथ पर, शक्ति सहित मैं करूं गमन।।
इसी भावना से सबकी, पूजन का जागा है उत्साह।
द्रव्य हीन हूं फिर भी मेरे, मन में है प्रभु भक्ति अथाह।।
सबका आह्वानन् सुस्थापन, सन्निधिकरण करूं स्वामी।
जल, फलादि वसु द्रव्य चढ़ाकर पूजूं हे अन्तर्यामी।।
यही विनय है यही प्रार्थना, मेरी पूजा हो स्वीकार।
आप कृपा से निज स्वभाव, रथ पर चढ़ हो जाऊं भव पार।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।*
*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।*
*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।*

## अष्टक

वीरछन्द

जन्म मरण दुख क्षय करने को प्रथम करूं मिथ्यात्व अभाव।
भेद ज्ञान शुचिनीर प्राप्त कर पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।।
सभी ऋद्धिधारी ऋषियों को भक्ति पूर्वक करूं नमन।
भाव द्रव्य संयममय मुनिवर सबकी आज करूं पूजन।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

भव संताप हरने को अविरति का मैं करूं अभाव।
स्वपर विवेक भाव चन्दन से पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।।
सभी ऋद्धिधारी ऋषियों को भक्ति पूर्वक करूं नमन।
भाव द्रव्य संयममय मुनिवर सबकी आज करूं पूजन।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

भव समुद्र को पार करूं, पाऊं निश्चय संयम का भाव।
अक्षत गुण अनन्त प्रगटाऊं, पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।। सभी.।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।*

काम वाण के शूल मिटाऊं, नाशूं सकल प्रमाद विभाव।
महाशील के पुष्प संजोऊं, पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।। सभी.।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

क्षुधा वेदनी नष्ट करूं मैं, पाऊं अप्रमत्त का भाव।
ज्ञायक भाव सुचरू मैं लाऊं, पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।। सभी.।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

मोह व्याधि से रहित बनूं मैं, कर कषाय का पूर्ण अभाव।
सम्यक् ज्ञान प्रकाश दीप ले, पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।। सभी.।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।*

अष्ट कर्म अरि नष्ट करूं मैं, करके अन्तिम योग अभाव।
ध्यान धूप ले कर्म जलाऊं, पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।। सभी.।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

महा मोक्ष पद पाने को मैं, शीघ्र करूं संसार अभाव।
रत्नत्रय का फल प्रगटाऊं, पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।। सभी.।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

पद अनर्घ्य की गरिमा पाऊं, हर चारों गतियों के घाव।
नाचूं गाऊं अर्घ्य चढ़ाऊं, पाऊं अपना शुद्ध स्वभाव।। सभी.।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

सोरठा

आश्रव सारे जीत, संवर रूपी शस्त्र से।
कर्म बन्ध कर नष्ट, सहज निर्जरा शक्ति से।।

दुश्चरित्र सब त्याग, उर सम्यक् चारित्र धर।
यथा ख्यात चारित्र, शुद्ध मोक्ष का हेतु है।।

छंद–मत्त सवैया

क्षायक स्वभाव के आश्रय से, पुरुषार्थ प्रकट होता महान।
पर्यायों के प्रवाह का क्रम, बढ़ता अटूट अति शक्तिमान।।
क्रम नियमित यह कहलाता है, क्रमबद्ध यही कहलाता है।
प्रत्येक कार्य अपने स्वकाल, में ही होता बतलाता है।।
जो होने वाला होता है, सब जान रहा सर्वज्ञज्ञान।
अन्यथा नहीं कुछ होता है, यह निर्णय ही सम्यकत्व प्राण।।
पर्याय क्षणिक सत्, क्रम, नियमित पर्याय अहेतुक हैं सदैव।
ज्ञाता दृष्टा को श्रद्धा है, क्रमसर पर्यायें हैं सदैव।
इसका स्वकाल इसका निमित्त, पुरुषार्थ जन्म क्षण निश्चित है।
सर्वज्ञों के कैवल्य ज्ञान में, झलक रहा सब युगपत् है।।
निःशंकित हो यह निर्णय, कर, आकुलता का होगा अभाव।
तू भी सर्वज्ञ स्वभावी है, तेरा भी है ज्ञायक स्वभाव।।
पहिले आगम से, निर्णयकर, फिर युक्ति ज्ञान से निर्णय कर।
फिर पर से दृष्टि हटा अपनी, ज्ञायक स्वरूप का निश्चय कर।।
बस इतना ही पुरुषार्थ बहुत सम्यक दर्शन प्रगटाने को।
कर्तृत्व बुद्धि क्षय करने को ज्ञाता द्रष्टा बन जाने को।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महा अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

सोरठा

चौसठ ऋद्धि विधान, भक्ति भाव से कीजिए।
केवल ज्ञान सुऋद्धि, निश्चित ही होगी प्रगट।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्ठि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महा अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीर

लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूं अवसान।
ज्ञानभाव की परम शक्ति से करूं आत्मा का कल्याण।।
सिद्ध स्वपद की ऋद्धि प्राप्त, करने का हे उद्देश्य महान।
ध्रुव ज्ञायक स्वभाव के द्वारा, पाऊं वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः*

## पूजन क्रमांक – 2

# श्री बुद्धि ऋद्धि धारी पूजन

प्रथम बुद्धि ऋद्धि भेद – १८

छन्द चान्द्रायण

अष्ट ऋद्धि, के, चौंसठ भेद महान हैं।
सर्व ऋद्धि में, केवल ज्ञान प्रधान है।।
पृथक–पृथक मैं, अर्घ्य चढ़ाऊं भाव से।
जैसे भी हो जुडूं, सदैव स्वभाव से।।

सोरठा

सप्त तत्व में श्रेष्ठ, निज स्वतत्व ही पूर्ण है।
स्वपर भेद विज्ञान, से हो जाता प्राप्त यह।।
दो अथवा नय सप्त, निश्चय नय सर्वोच्च है।
नयातीत ध्रुव रूप, ही आश्रय के योग्य है।।

दोहा

कर्त्ता बुद्धि विनष्ट कर, करूं आत्म कल्याण।
अकर्तृत्व निजशक्ति से, पाऊं केवलज्ञान।।

छन्द–तांटक

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह केवलज्ञान मनः पर्यय।
अवधिज्ञान अरुबीज कोष्ठ पादानुसारिणी है निश्चय।।
संभिन्न संश्रोतृत्व दूर, स्पर्श, श्रवण स्वादित्व प्रधान।
घ्राण दूर दर्शित्व पूर्व दश तथा चर्तुदश पूर्व महान।।
है अष्टांग निमित्त ज्ञान, अरु प्रज्ञा श्रवण बुद्धि प्रत्येक।
अरुवादित्व ऋद्धि के धारी, पूजूं, जागे स्वपर विवेक।।
विनय पूर्वक भक्ति भाव से, नाचूं गाऊं हर्षाऊं।
चौंसठ ऋद्धि विधान रचाऊं सम्यक् दर्शन प्रगटाऊं।
फिर रत्नत्रय धारण करके, मोक्ष मार्ग पर आ जाऊं।
सिद्ध शिला सिंहासन पाकर, सादि अनन्त सौख्य पाऊं।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

## स्थापना

छन्द – दोहा

बुद्ध ऋद्धि धारी प्रभो, परम श्रेष्ठ मुनिराज।
भाव सहित पूजन करूं, पाऊं निज पद राज।।

*ॐ ह्रीं श्री अष्टादशप्रकार बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।*
*ॐ ह्रीं श्री अष्टादशप्रकार बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।*
*ॐ ह्रीं श्री अष्टादशप्रकार बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट्।*

## अष्टक

छन्द, सार (जोगीरासा)

उत्तम प्रासुक नीर समुज्ज्वल, भक्ति भाव से लाऊं।
जन्म जर्रा मृतु क्षय करने को, श्री मुनिचरण चढ़ाऊं।।
बुद्धि ऋद्धि के धारी ऋषिवर, मिथ्यातिमिर विनाशो।
भेद ज्ञान की कला सिखादो सम्यक् ज्ञान प्रकाशो।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

भव आताप विनाश हेतु मैं, शीतल चंदन लाऊं।
सर्वोपद्रव क्षय करने को, श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

अनुपम धवलोज्ज्वल अक्षत के, उत्तम पुंज बनाऊं।
निज अक्षय पद प्राप्ति हेतु मैं, श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।*

भांति-भांति के गंधमयी, शुभ पुष्प विनय से लाऊं।
काम रोग विध्वंस हेतु मैं, श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

अनुभव रस मय सुचरु, सुहावन शुद्ध भाव के लाऊं।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, मैं श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

जगमय-जगमग ज्ञान चेतना, के ही दीप जगाऊं।
मोह तिमिर के नाश हेतु, मैं श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध सुगंधित धूप बनाऊं, ध्यान स्वयं का ध्याऊं।
अष्ट कर्म क्षय करने को मैं, श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

पुण्य फलों की रुचि को जीतूं, शुद्ध भावना भाऊं।
पूर्ण मोक्ष फल प्राप्ति हेतु, मैं श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

अष्ट प्रकारी अर्घ्य अनूठा, भावमयी मैं लाऊं।
पद अनर्घ्य की महिमा पाऊं, श्री मुनि चरण चढाऊं।। बुद्धि ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 1. केवलज्ञान ऋद्धि धारी

(छंद–तांटक)

केवल ज्ञान ऋद्धि, ऋषियों को है सादर वन्दन।
सकल द्रव्य गुण पर्यायें, सब जान रहे युगपत् प्रतिक्षण।।
लोकालोक त्रिकाल झलकता, दिव्यज्ञान में दर्पणवत।
त्रिकाल सर्वज्ञों के चरणों में, है यह मस्तक नितनत।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 2. मनःपर्ययज्ञान धारी

बुद्धि मनः पर्यय से मुनिवर, जानें रूपी द्रव्य यथार्थ।
द्वीप अढ़ाई तक संज्ञी जीवों के मनगत सकल पदार्थ।।
ऋजुमति तथा विपुल मति दोनों भेद महान प्राप्त करते।
निज स्वरूप का अवलंबन ले, सर्व कषाय भाव हरते।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री मनःपर्ययज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 3. अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धि धारी

अवधिज्ञान धारी पदार्थ सब रूपी जान रहे प्रत्यक्ष।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल अवधि से, सर्व पदार्थ ज्ञान में दक्ष।।

देशावधि सर्वावधि परमावधि होता यह तीन प्रकार।
निज स्वरूप में ही तल्लीन सदा रहते हैं मुनि अविकार।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 4. बीज बुद्धि ऋद्धि धारी

एक बीज पद सुनते ही लेते हैं सकल ग्रन्थ को जान।
बीज बुद्धि की ऋद्धि प्राप्त कर, करते हैं निज पर कल्याण।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री बीज बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 5. कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारी

कोष्ठ बुद्धि की ऋद्धि प्राप्त कर भी रहते मुनिअविकारी।
भिन्न भिन्न तत्त्वों का सम्यक् अर्थ बताते अनगारी।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 6. पादानुसारित्व ऋद्धिधारी

पासुऋद्धि पादानुसारिणी होता ज्ञान सदा अव्यर्थ।
किसी ग्रन्थ का आदि मध्य या, अंतिम पद सुन पूरा अर्थ।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री पादानुसारित्व ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 7. संभिन्न श्रोतृत्व ऋद्धि धारी

है संभिन्न श्रोतृत्व ऋद्धि जो श्रवण शक्ति की परिचायक।
चक्रवर्ति के सकल कटक के जीवों की ध्वनि के ज्ञायक।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री संभिन्न बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 8. दूर स्वादनत्व ऋद्धि धारी

दूर स्वादनत्व ऋद्धि रस लेने में समर्थ अविवाद।
शत योजन की दूरी पर जो रस हैं मुनि ले सकते स्वाद।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विंश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री दूर स्वादनत्व ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 9. दूर स्पर्शनत्व ऋद्धि धारी

दूर स्पर्शन ऋद्धि सहस्त्रोंयोजन के पदार्थ छूती।
ऐसी शक्ति प्रगट हो जाती, फिर भी निज की अनुभूति।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री दूर स्पर्शनत्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 10. दूर दर्शनत्व ऋद्धि धारी

दूर दर्शनत्व ऋद्धि की शक्ति सहस्त्रों योजन तक।
जो पदार्थ दूरस्थ उन्हें भी लेते देख साधु सम्यक्।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री दूर दर्शनत्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 11. दूर घ्राणत्व ऋद्धि धारी

ऋद्धि दूर घ्राणत्व दूरवर्ती पदार्थ लेती है जान।
शत-शत योजन की गंधों का पल में कर लेती है ज्ञान।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री दूर घ्राणत्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 12. दूर श्रवणत्व ऋद्धि धारी

ऋद्धि दूर श्रवणत्व शक्ति सुन सकती शब्द दूर के भी।
शब्द सहस्त्रों योजन तक के सुनकर रहते निज में ही।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री दर श्रवणत्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 13. दश पूर्वित्व ऋद्धिधारी

दश पूर्वित्व ऋद्धि से होता दश पूर्वों का पूरा ज्ञान।
स्वतःप्राप्त होती विद्याएं सेवा में आती अमलान।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 14. चतुर्दश पूर्वित्व ऋद्धिधारी

ऋद्धि चतुर्दश पूर्वित्व से पूर्व चतुर्दश तक का ज्ञान।
सहज प्राप्त होता ऋषियों को सम्यकतप की महिमा जान।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुर्दशपूर्वित्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 15. अष्टांग निमित्त कुशलत्व ऋद्धिधारी

है अष्टांग निमित्त कुशलत्व बुद्धि ऋद्धि की शक्ति महान।
अंतरीक्ष आदिक निमित्त से लेते हैं भविष्य पहिचान।।
भौम अंग स्वर लक्षण व्यंजन, छिन्न स्वप्न आदिक को देख।
हानि लाभ शुभ अशुभ जानते, जो भी हो आगामी लेख।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री अष्टांग निमित्त कुशलत्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 16. प्रज्ञाश्रमणत्व ऋद्धिधारी

प्रज्ञा श्रमणऋद्धि से होती प्रज्ञाशाली शक्ति विचित्र।
बिना पढ़े ही द्वादशांग का होता पूरा ज्ञान पवित्र।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञा श्रमणत्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 17. प्रत्येक बुद्धत्व ऋद्धिधारी

हैं प्रत्येक ऋद्धि धारी जिनके उर में है पूरा बोध।
बिन उपदेश प्राप्त होता है, स्वयं सहज ही विमल प्रबोध।।

बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री प्रत्येक बुद्धत्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 18. वादित्व ऋद्धिधारी

हैं वादित्व ऋद्धि के धारी, शास्त्रार्थ में परम प्रवीण।
महावादि भी हार मानते, ये सत्पथ में रहते लीन।।
बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषियों को, भाव सहित मैं करूं प्रणाम।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं, पाऊं प्रभु निज में विश्राम।।

*ॐ ह्रीं श्री वादित्व बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

दोहा

निश्चयनय का विषय है, कारण शुद्ध पर्याय।
हैं स्वभाव पर्याय ही, कार्य शुद्ध पर्याय।।

(छंद – मत्त सवैया)

प्रत्येक द्रव्य सम्पूर्ण शुद्ध स्वाधीन स्वयं से है अभिन्न।
पर से कुछ भी संबंध नहीं, पर से त्रिकाल ही सदा भिन्न।।
पर का कर्त्ता पर का धर्त्ता, पर का भोक्ता यह लेश नहीं।
अपना स्वरूप सत्ता ध्रुव है, पर का किंचित भी वेश नहीं।।
यह द्रव्य दृष्टि जब होती है, पर्याय दृष्टि उड़ जाती है।
अपने स्वभाव की ओर दृष्टि, स्वयंमेव स्वतः मुड़ जाती है।
तुम द्रव्य दृष्टि बनने का ही, प्रतिपल प्रति क्षण अभ्यास करो।
है मोक्ष मार्ग का यही मूल, पहिले इसका विश्वास करो।।
पहिले व्यवहार गौण करके, निश्चय को मुख्य बनाओ तुम।
निश्चय स्वरूप निज आश्रय ले, बस द्रव्य दृष्टि बन जाओ तुम।।
बस यही मोक्ष का मार्ग एक रत्नत्रय रूप महान श्रेष्ठ।
इस पथ पर जो करते प्रयाण, वे ही हरते भव बंध नेष्ठ।।
उनका स्वभाव पुरुषार्थ, काल भवितव्य सभी होता विशुद्ध।
सर्वज्ञ दशा प्रगटित होती, अरहंत अवस्था परम शुद्ध।।
सम्पूर्ण वीर्य गुण का विकास सम्पूर्ण ज्ञानगुण का विकास।
उनमें अनन्त गुण प्रगटित हो, करते अनन्त कालो निवास।।

दोहा

सत्य मार्ग है मुक्ति का, रत्नत्रय अभियान।
मुक्ति वधू मिलती स्वयं, जब होता निर्वाण।।

*ॐ ह्रीं श्री बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

(वीरछंद)

सिद्ध स्वपद की ऋद्धि, प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुव ज्ञायक की महिमा द्वारा, पाऊं वीतराग–विज्ञान।।
लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूं अवसान।
ज्ञानभाव की परमशक्ति से करूं आत्मा का कल्याण।

*इत्याशीर्वादः*

पंच परम परमेष्ठी देखे.....।
हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है।
हो ऽऽ ऽऽ ऽऽ ..... सम्यग्दर्शन होता है।। टेक।।
दर्शज्ञानसुखवीर्य स्वरूपी गुण अनन्त के धारी हैं।
जग को मुक्तिमार्ग बताते निजचैतन्य विहारी हैं।।
मोक्षमार्ग के नेता देखे विश्वतत्त्व के ज्ञाता देखे।। 1।।
द्रव्यभावनोकर्म रहित जो सिद्धालय के वासी हैं ।
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर अमर अविनाशी हैं।।
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योग रहित निज योगी देखे।। 2।।
साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं।
निजपर के हितकारी गुरुवर, देवधर्म परिचायक हैं।।
गुण छत्तीस सु पालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे।। 3।।
जिनवाणी को हृदयंगम कर शुद्धातम रस पीते हैं।
द्वादशांग के धारक मुनिवर ज्ञानानन्द में जीते हैं।।
द्रव्यभाव श्रुत धारी देखे, बीस-पाँच गुणधारी देखे।। 4।।
निजस्वभाव साधनरत साधु, परम दिगम्बर वनवासी।
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी।।
चलते-फिरते सिद्धप्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे।।5।।

## पूजन क्रमांक – 3

# श्री विक्रिया ऋद्धिधारी पूजन

द्वितीय विक्रिया ऋद्धि भेद – ११

सोरठा

अपना शुद्ध स्वभाव, सर्वोत्तम संसार में।
त्रैकालिक शिवभूप, यही रत्न अनमोल है।

दोहा

दृष्टिक्रिया नय से हटा, तजदूं सब अज्ञान।
दृष्टिज्ञान नय पर लगा, पाऊं मोक्ष महान।।

वीरछन्द

ऋद्धि विक्रिया के हैं ग्यारह, भेद सुअणिमा महिमा जान।
लघिमा गरिमा कामरुपित्व वशित्व ईशत्व प्राकाम्य महान।।
अंतर्धान प्राप्ति अरु अप्रतिघात ऋद्धिधारी मुनिराज।
सादर चरण कमल मैं पूजूं एकमात्र निज हित के काज।।
अर्घ्य चढ़ाऊं नाचूं गाऊं भक्ति भाव से हर्षाऊं।
चौंसठ ऋद्धि विधान रचाऊं सम्यक् दर्शन प्रगटाऊं।।
फिर रत्नत्रय धारण करके मोक्ष मार्ग पर आ जाऊं।
सिद्ध शिला सिंहासन पाकर सादि अनन्त सौख्य पाऊं।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

## स्थापना

दोहा

ऋद्धि विक्रिया के धनी, योगीश्वर ऋद्धिराज।
विनय सहित वंदन करूं, पाऊं ज्ञान जहाज।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।*
*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।*
*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषि समूह अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट सिन्निधिकरणं।*

## अष्टक

छंद सखी

उत्तमजल प्रासुकलाऊं। जन्मादिक रोग मिटाऊं।।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

निज अनुभव चंदन लाऊं। भव आतप पर जय पाऊं।।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।*

निज अनुभव अक्षत लाऊं। अक्षय पद निज प्रगटाऊं।।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।*

अनुभव के पुष्प बनाऊं। निष्काम सहज हो जाऊं।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

अनुभव नैवेद्य सजाऊं। उर संतोषामृत पाऊं।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

अनुभव के दीप उजारूं। मोहान्धकार निरवारूं।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।*

अनुभव की धूप चढ़ाऊं। कर्मों के पुंज जलाऊँ।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

अनुभव के सुफल सजाऊं। प्रभु महा मोक्ष फल पाऊं।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

निज अनुभव अर्घ्य बनाऊं। पदवी अनर्घ्य प्रगटाऊं।
मुनि ऋद्धि विक्रिया धारी। जय जय ऋषिवर अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री एकादश विक्रिया ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

# अर्घ्यावलि

## 1. अणिमा ऋद्धिधारी

वीरछंद

कमलनाल में भी जा सकते शत–शत धनुषों का हो तन।
तन को अणु सम लघु कर लेते अणिमाधारी ऋद्धि मुनिगण।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री अणिमा–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 2. महिमा ऋद्धिधारी

महिमा ऋद्धि शक्ति से करते देह बढ़ा कर मेरु समान।
एक लाख योजन तक ऊँची देह बना लेते अमलान।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री महिमा–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 3. लघिमा ऋद्धिधारी

लघिमा ऋद्धिधारी मुनि करते सूक्ष्म पवन से हलकी देह।
आक रुई से भी हलका तन होता उनका निःसंदेह।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री लघिमा–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 4. गरिमा ऋद्धिधारी

गरिमा ऋद्धि धारि मुनि करते तन को गिरिसम अचल समर्थ।
इन्द्रादिक भी उन्हें चलित करने में होते हैं असमर्थ।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री गरिमा–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 5. प्राप्ति ऋद्धिधारी

प्राप्ति ऋद्धि से भूपर बैठे अंगुली अग्र भाग द्वारा।
रवि शशि मेरु सुगिरि को छूने में समर्थ मुनि अनगारा।।

ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री प्राप्ति–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 6. ईशत्व ऋद्धिधारी

हैं ईशत्व ऋद्धि के धारी तीन लोक पूजित ऋद्धीश।
इन्द्र सुरासुर चक्रि नत हो उन्हें झुकाते सादर शीष।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री ईशत्व–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 7. वशित्व ऋद्धिधारी

हैं वशित्व ऋद्धि के धारी तीन लोक पूजित ऋद्धीश।
वशीभूत हो जाते सब, इन्द्र नरेन्द्र हे जगदीश।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री वशित्व–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 8. प्राकाम्य ऋद्धिधारी

हैं प्राकाम्य ऋद्धि के धारी सर्व लोक में परम प्रसिद्ध।
जल पर थलसम थल पर जलसम डूबे उतरें चलें सुसिद्ध।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री प्राकाम्य–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 9. अप्रतिघात ऋद्धिधारी

अप्रतिघात ऋद्धि के धारी पर्वत में भी करें प्रवेश।
नहीं किसी से भी रुकते हैं बाह्यान्तर निर्ग्रंथ स्ववेश।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघात–ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 10. अंतर्धान ऋद्धिधारी

अंतर्धान ऋद्धि के धारी हो जाते हैं अंतर्धान।
हो जाते अदृश्य निमिष में किन्तु नहीं मन में अभिमान।।

ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री अंतर्धान ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 11. कामरूपित्व ऋद्धिधारी

काम रूपिणी ऋद्धि प्राप्त कर मनवांछित करते तन रूप।
विविध भांति का रूप बना लें निमिष मात्र में मन अनुरूप।।
ऋद्धिविक्रिया के स्वामी मुनियों को सादर करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ आत्मा का चिन्तन।।

*ॐ ह्रीं श्री कामरूपित्व ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

सोरठा

षट्कायिक के जीव, मोह वशात दुखी सदा।
जो स्वभाव के पास, वे ही अंतर आत्मा।।
स्वपर प्रकाशक ज्ञान, अद्भुत महिमामय सदा।
पंच ज्ञान में श्रेष्ठ, केवलज्ञान महान है।।

छंद–मत्त सवैया

द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक ये नय निश्चय व्यवहार रूप।
पर्याय दृष्टि से सदाभिन्न अपना ज्ञायक निश्चय स्वरूप।।
है सारा ही व्यवहारहेय निश्चय स्वरूप ही उपादेय।
निश्चय का आलंबन सदैव सिद्धत्व सिद्धि में पूर्ण श्रेय।।
नर सुर पशु नारक पर्यायें व्यवहाराधीन विभाव जन्य।
ये राग–द्वेष परिणाम सभी आस्रव स्वरूप हैं कर्मजन्य।।
जब इनसे दृष्टि पृथक होगी अपने स्वरूप पर आएगी।
सम्यग्दर्शन की दिव्यप्रभा तेरे भीतर मुसकाएगी।।
फिर मोक्षमार्ग अति सहज सरल स्वयमेव दृष्टि में आएगा।
तू सहज स्वरूपाचरणमयी चारित्र भव्य प्रकटाएगा।।
पथ में अनगिनती विषकंटक आएँगे पर उड़ जाएँगे।
क्षण भर में तेरे भाव शुद्ध कैवल्य सुनिधि प्रकटाएँगे।
शुद्धात्म स्वरूप प्रकट होगा निर्मल अनन्त गुणमय प्रसिद्ध।
तू नयातीत हो जाएगा होगा परिपूर्ण महान सिद्ध।।

यह मोक्ष प्राप्त करने की विधि अत्यंत सरल शाश्वत त्रिकाल।
सत्यार्थ यही भूतार्थ यही परमार्थ यही पावन विशाल।।

दोहा

ध्यान ध्यान सबही कहें, ध्यान न जाने कोय।
निज स्वभाव के भान बिन, ध्यान कहाँ से होय।।

*ॐ ह्रीं श्री विक्रिया ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीर छंद

लौकिक ऋद्धिसिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञान भाव की परमभक्ति से करूँ आत्मा का कल्याण।।
सिद्ध स्वपद की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुवज्ञायक की महिमा द्वारा पाऊँ वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

## गुरु भक्ति

ऐसे मुनिवर देखे वन में,
जाके राग-द्वेष नहीं तन में ।।टेक।।
ग्रीष्म ऋतु शिखर के ऊपर,
मग्न रहे ध्यानन में ।।1।।
चातुरमास तरुतल ठाड़े,
बून्द सहे छिन-छिन में ।।2।।
शीत मास दरिया के किनारे,
धीरज धरें ध्यानन में ।।3।।
ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊं,
देत ढोक चरणन में ।।4।।

## पूजन क्रमांक - 4

# श्री चारण ऋद्धिधारी पूजन

तृतीय–चारणऋद्धि भेद ६

सोरठा

चार अभाव प्रसिद्ध, भाव पूर्वक समझिये।
निज स्वभाव की सिद्धि, होती निजपुरुषार्थ से।।
षटकायिक को जान, अब पर से संबंध तज।
तू ही कारण कार्य, समयसार स्वयमेव है।।

दोहा

रागद्वेष में संसरण, ही अनादि की भूल।
पर भावों का कर क्षरण, यही मुक्ति का मूल।।

वीरछन्द

नौ प्रकार की चारण ऋद्धि सहज हो जातीं मुनि को सिद्ध।
जंघा चारण जल चारण श्रेणी चारण ऋद्धियाँ प्रसिद्ध।।
पत्र पुष्प फल बीज तंतु चारण अरु अग्नि शिखा चारण।
महा ऋद्धिधारी मुनि वन्दूँ करूँ विवेक हृदय धारण।।
अर्घ्य चढाऊँ भक्तिभाव से नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ।
चौंसठ ऋद्धि विधान रचाऊं सम्यग्दर्शन प्रकटाऊँ।।
फिर रत्नत्रय धारण करके मोक्षमार्ग पर आ जाऊँ।
सिद्धशिला सिंहासन पाकर सादि अनन्त सौख्य पाऊँ।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

## स्थापना

छंद–दोहा

सर्व क्रिया चारण धनी, मंगलमय मुनिराज।
भक्ति सहित पूजन करूँ, पाऊँ आत्म स्वराज।।

*ॐ ह्रीं श्री नवभेदचारण–ऋद्धिधारी ऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।*
*ॐ ह्रीं श्री नवभेदचारण–ऋद्धिधारी ऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।*
*ॐ ह्रीं श्री नवभेदचारण–ऋद्धिधारी ऋषि समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सिन्निधिकरणम्।*

## अष्टक

छंद हरिगीतिका

नीरक्षीरोदधि सुपावन चरण में अर्पित करूं।
सहज ज्ञान स्वभाव द्वारा विविध भव पीड़ा हरूं।।
ऋद्धि चारण प्राप्त ऋषियों की सदा पूजन करूं।
अतीन्द्रिय आनन्द पाऊं कर्म के बंधन हरूं।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

सहज शान्त स्वभाव चंदन हृदय में संचित करूं।
स्वयं को संसार के आताप से वंचित करूं।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।*

सहज भावाक्षत अनोखे ला स्वधारा से जुडूं।
पद अखण्ड अपूर्व पाऊं अब विभावों से मुडूं।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।*

सहज भाव स्वभाव भावी मोक्ष सुखदायी महान।
काम भाव विनष्ट करके मुक्ति का पाऊं विहान।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

ज्ञान के नैवद्यरसमय तृप्तिदायक शाश्वत।
क्षुधादिक भव दोष अष्टादश करूं संपूर्ण हत।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

ज्ञान का आलोकमय दीपक जलाऊं मैं सदा।
मोहतम क्षय कर जिऊं निर्दोष बनकर सर्वदा।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।*

भावनामय धूप लाऊं कषायों को क्षीण कर।
अष्टकर्म विनष्टकर शिवसौख्य पाऊं धैर्य धर।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

पाप पुण्य अभाव का फल अतीन्द्रिय आनन्दमय।
मोक्ष फलदायक सदा ही पूर्ण परमानन्द मय।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

जलफलादिक अर्घ्य अर्पित करूं उत्तम भाव से।
पद अनर्घ्य अपूर्व पाऊं मात्र ज्ञानस्वभाव से।। ऋद्धि.।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## अर्घ्यावलि

### 1. जंघा चारण ऋद्धिधारी

वीर

जंघाचारण ऋद्धि प्राप्त मुनि भू के ऊपर अंगुलचार।
क्षण में जाते कई योजनों तक करते निर्बाध विहार।।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री जंघाचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 2. जलचारण ऋद्धिधारी

जलचारण है ऋद्धि अनूठी तप बल से होती साकार।
जल के ऊपर बिना छुए ही करते हैं मुनिनाथ विहार।।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री जलचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 3. श्रेणी चारणत्व ऋद्धिधारी

श्रेणी चारणत्व ऋद्धि से गगन गमन करते सुखकार।
नभ प्रदेश की पंक्ति अनुसरण करके होता भव्य विहार।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री श्रेणीचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 4. पत्रचारण ऋद्धिधारी

ऋद्धि पत्र चारण अति अद्भुत तपधारी मुनि पाता है।
पत्तों के ऊपर बिन पर्शे गमन स्वतः हो जाता है।।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री पत्रचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 5. फलचारण ऋद्धिधारी

फल चारण सु ऋद्धि निज ध्यानी महातपस्वी पाता है।
फलको पर्शे बिन फल ऊपर गमन सहज हो जाता है।।

क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री फलचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 6. पुष्प चारणऋद्धिधारी

ऋद्धि पुष्पचारण धारी मुनि आत्म ध्यान को ध्याता है।
पुष्पों को पर्शे बिन मुनि का गमन सहज हो जाता है।।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री पुष्पचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 7. अग्निशिखाचारणधारी

अग्निशिखाचारण सुऋद्धि धारीमुनि का मन पावन है।
अग्नि शिखा पर गमन हो रहा मुनिवर का मन भावन है।।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री अग्निशिखाचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 8. बीज चारण ऋद्धिधारी

ऋद्धि बीज चारण को तपधारी मुनिवर ही वरते हैं।
बीज सुऊपर बिन पर्शे ही गमन आगमन करते हैं।।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री बीजचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 9. तंतुचारण ऋद्धिधारी

ऋद्धितंतुचारणधारी मुनि प्रतिपल निज को भजते हैं।
तंतु मात्र के ऊपर बिन पर्शे सुगमन कर सकते हैं।।
क्रिया ऋद्धि के धारक ऋषि मुनियों को सविनय करूँ नमन।
चौसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं करूँ धर्म का आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री तंतुचारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

दोहा

साम्यभाव चारित्र ही परम धर्म सुविशाल।
सिद्ध अनंतों हो गए इसी धर्म को पाल।।
पुण्यपाप परिहार कर लो सम्यक् चारित्र।
निश्चय शिव फल प्राप्त हो पावन परम पवित्र।।

वीरछंद

रागद्वेष है अगर हृदय में तो कैसा सम्यक चारित्र।
बाह्य क्रिया काण्डों में लय है जो है प्रभु मिथ्य चारित्र।।
समभावी हो निज स्वब्रम्ह में चर्या करना सहज स्वतंत्र।
अनुभव रस का पान किए बिन सदा रहेगा तू परतंत्र।।
यदि कर्मों से तुझे मुक्त होना है तो कर दृढ़ पुरूषार्थ।
निजस्वभाव का साधन लेकर आश्रय में ले निज भूतार्थ।।
देख मुक्ति का मार्ग स्वयं ही आया तेरे सहज समीप।
अपने चरण इसी रथ पर रख लिए बुद्धि में ज्ञान प्रदीप।।
थोड़ा सा आगे बढ़ते ही क्षायिक श्रेणी पाएगा।
चार घातिया क्षय कर देगा केवल ज्ञान उपाएगा।।
फिर आगे ऊपर चढ़ते ही परम सिद्ध बन जाएगा।
मुक्तिरमा से परिणय करके सिद्ध लोक को पायेगा।
साधि अनंत समाधि मिलेगी सुख समुद्र लहराएगा।
त्रिलोकाग्र पर तेरा यश ध्वज सदा सदा फहराएगा।।
एक यही है मार्ग मुक्तिका जो भी प्राणी पाएगा।
निज सिद्धत्व स्वरूप प्रगट कर महा मोक्ष पद पाएगा।।

दोहा

यथा ख्यात चारित्र की महिमा महा महान।
जब होता है पूर्ण यह मिलता पद निर्वाण।।

*ॐ ह्रीं श्री चारण ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीरछंद

लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञानभाव की परमशक्ति से करूँ आत्मा का कल्याण।।
सिद्ध स्वपर की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुवज्ञायक की महिमा द्वारा पाऊँ वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

## वह घड़ी कब आयेगी

संत साधु वन के विचरूं वह घड़ी कब आयेगी।
चल पडूं में मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी।।टेक।।
हाथ में पीछी कमण्डलु, ध्यान आतमराम का।
छोड़कर घरबार दीक्षा की घड़ी कब आयेगी।।१।।
आयेगा वैराग्य मुझको, इस दुःखी संसार से।
त्याग दूंगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी।।२।।
पाँच समिति तीन गुप्ति बाईस परीषह भी सहूं।
भावना बारह जु भाऊं, वह घड़ी कब आयेगी।।३।।
बाह्य उपाधि त्यागकर निजतत्त्व का चिंतन करूं।
निर्विकल्प होवे समाधि वह घड़ी कब आयेगी।।४।।
भव-भ्रमण का नाश होवे इस दुःखी संसार से।
विचरूं मैं निज आतमा में, वह घड़ी कब आयेगी।।५।।

## पूजन क्रमांक – 5

# श्री तपो ऋद्धिधारी पूजन

चतुर्थ तपोतिशय ऋद्धि भेद ७

सोरठा

गुण सामान्य विशेष भलीभांति पहचानिये।
गुण अनंत के पुञ्ज सभी जीव सामान्य हैं।।
चार ध्यान को जान धर्म ध्यान प्रारंभ कर।
शुक्ल ध्यान की शक्ति तुझमें अपरंपार है।।

दोहा

भवितव्यता सुभगवती निश्चित नियत त्रिकाल।
युगपत झलके ज्ञान में श्री सर्वज्ञ विशाल।।

छन्द–तांटक

तपो ऋद्धि के सात भेद हैं स्वतः प्रगट हो जाते हैं।
उग्र दीप्त अरु तप्त महातप घोर तपः कहलाते हैं।।
घोर पराक्रम तथा अघोर ब्रह्मचर्य तप ऋद्धिप्रधान।।
तपो ऋद्धिधारी ऋषियों के चरण कमल बन्दूं अमलान।।
सर्व उपद्रव स्वयं दूर होते हों मुनिका जहां निवास।
षडऋतु के फलफूल वृक्ष सब फलते होता स्वयं विकास।।
तपोऋद्धि धारी ऋषियों को अर्घ्यं चढ़ाऊं हर्षाऊं।
चौंसठ ऋद्धि विधान रचाऊं सम्यक् ज्ञान सहज पाऊं।।
फिर सम्यक् चारित्र ग्रहण कर मोक्षमार्ग पर आ जाऊं।
सिद्ध शिला सिंहासन पाकर सादि अनंत सौख्य पाऊं।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

## स्थापना

दोहा

तपोऋद्धि धारक प्रभो सतत् तपस्या लीन।
श्री मुनि चरण पखार कर करूं मोह अरि क्षीण।

*ॐ ह्रीं श्री तपोऋद्धिधारी ऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।*
*ॐ ह्रीं श्री तपोऋद्धिधारी ऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।*
*ॐ ह्रीं श्री तपोऋद्धिधारी ऋषि समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।*

## अष्टक

छंद–चांद्रायण

शुद्ध भाव का शीतल जल ही लीजिए।
जन्ममरण भव रोग नाश अब कीजिए।।
तपो ऋद्धिधारी स्वभाव संयुक्त हैं।
पंच समिति त्रय गुप्ति पंचव्रत युक्त हैं।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

मलजय चंदन शुद्ध भाव का लीजिए।
भव संताप ताप पूरा क्षय कीजिए।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।*

श्वेत स्वच्छ अक्षत हे स्वामी लीजिए।
अक्षय पद से मुझे अलंकृत कीजिए।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।*

परम सुवासित धर्म सुमन यह लीजिए।
कामवाण से रहित मुझे प्रभु कीजिए।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

रसभीने चरु शुद्धभाव के लीजिए।
क्षुधाव्याधि सर्व दूर प्रभु कीजिए।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्धज्ञान के दीप प्रज्ज्वलित लीजिए।
घोरतिमिर अज्ञान नष्ट प्रभु कीजिए।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।*

दश प्रकार की धर्म धूप प्रभु लीजिए।
अष्ट कर्म संपूर्ण ध्वंस अब कीजिए।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

आस्रव बंध भाव पूरा क्षय कीजिये।
महा मोक्षफल सदा सदा को लीजिये।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्धभाव के अर्घ्य नाथ अब लीजिए।
पद अनर्घ्य अनमोल मुझे अब दीजिए।। तपो.।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## अर्घ्यावलि

### 1. उग्रतप ऋद्धिधारी

वीर

एक एक उपवास बढ़ाकर करते जाते हैं विस्तार।
ऋद्धि उग्र तप पा लेते हैं करते हैं जग का उद्धार।।
तपो ऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं सम्यक् ज्ञान परम हितकार।।

*ॐ ह्रीं श्री उग्रतप ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 2. दीप्ततप ऋद्धिधारी

बहु उपवासों द्वारा होती देह क्षीण पर दीप्ति महान।
ऋद्धि दीप्त तपधारी मुनि मुख से सुगंध झरती अमलान।।
तपो ऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं सम्यक् ज्ञान परम हितकार।।

*ॐ ह्रीं श्री दीप्ततप ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 3. तप्ततप ऋद्धिधारी

लेते हैं आहार किन्तु होता है उनको नहीं निहार।
तप्तसुतपो ऋद्धिधारी का शुष्क सुतन भी है अविकार।।
तपो ऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं सम्यक् ज्ञान परम हितकार।।

*ॐ ह्रीं श्री तप्ततप ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 4. महातप ऋद्धिधारी

ऋद्धि महातप अतिशय धारी मतिश्रुत अवधि सुविज्ञानी।
त्रस नाड़ी के सभी सूक्ष्म जीवों के भावों के ज्ञानी।।
तपो ऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं सम्यक् ज्ञान परम हितकार।।

*ॐ ह्रीं श्री महातप ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 5. घोर तप ऋद्धिधारी

घोर तपो सुऋद्धि के धारी निज अंतर में करें प्रवेश।
रोगादिक पीड़ा उपजे तो आत्म ध्यान से चिगें न लेश।।

तपो ऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं सम्यक् ज्ञान परम हितकार।।

*ॐ ह्रीं श्री घोर तप ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 6. घोर पराक्रम ऋद्धिधारी

घोर पराक्रम ऋद्धि धारि मुनि पर यदि कुनर करें उपसर्ग।
सर्वदेश में महामारि आदिक का होता कोप अवर्ग।।
तपो ऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं सम्यक् ज्ञान परम हितकार।।

*ॐ ह्रीं श्री घोरपराक्रम तप ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 7. अघोर ब्रह्मचारित्व ऋद्धिधारी

ऋद्धि अघोर ब्रह्मचर्य तपका अतिशय पाते मुनिराज।
मरी आदि का भीषण रोग न हो जिस थल मुनि करें निवास।।
तपो ऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं सम्यक् ज्ञान परम हितकार।।

*ॐ ह्रीं श्री अघोर ब्रह्मचारित्व ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

दोहा

षट्कारक को जानिए जो है राग विहीन।
अपने अपने कार्य का कारण है स्वाधीन।।

छंद–मत्त सवैया

प्रत्येक द्रव्य का षट् कारक अपने स्वद्रव्य में होता है।
पर्यायों का षट् कारक भी अपना स्वतंत्र ही होता है।।
तू ही कर्त्ता तू कर्म करण तू संप्रदान तू अपादान।
तू ही अधिकरण स्वयं का है तू ही त्रैकालिक शक्तिमान।।
प्रत्येक द्रव्य अपने परिणामों का कर्त्ता सर्वदा स्वयं।
अपने अपने षट् कारक से परिणमन सदा होता अनुपम।।
ऐसा निमित्त नैमित्तिक का संबंध सदा से है अटूट।
कर्त्ता है उपादान शाश्वत होता निमित्त उपचार झूठ।।
जब उपादान पर दृष्टि हुई कर्तृत्व बुद्धि सब गई फूट।

परका कर्तृत्व न रहा शेष अपना कर्तृत्व रहा अटूट।।
जब पुण्यभाव होता उर में तब पुण्य कार्य होते निमित्त।
जब पाप भाव होता उरमें तब पाप कार्य होते निमित्त।।
करज्ञान क्रिया जाग्रत उर में जो मोक्ष क्रिया का मूलमंत्र।
ध्रुवज्ञायक का ही आश्रय ले जो है सम्पूर्ण सदा स्वंतत्र।।
इस भांति विकारी पर्यायों का होगा क्षण भर में अभाव।
सम्पूर्ण ज्ञान सुख सागर तू परिपूर्ण एक ज्ञायक स्वभाव।।

दोहा

चिदानन्द चिद्रूप शिव है निर्मोह स्वरूप।
निजानन्द अविकार है परम चतुष्टयरूप।।

*ॐ ह्रीं श्री तपो ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीरछंद

लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञानभाव की परमशक्ति से करूँ आत्मा का कल्याण।।
सिद्ध स्वपर की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुवज्ञायक की महिमा द्वारा पाऊँ वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

### शुद्धात्म स्वरूपोहम्

शुद्धात्म स्वरूपोहम्। परमार्थ स्वरूपोहम्।।
सहजात्मस्वरूपोहम्। सत्यार्थ स्वरूपोहम्।।
अविकारस्वरूपोहम्। भतार्थ स्वरूपोहम्।।
निर्भार स्वरूपोहम्। पुरुषार्थ स्वरूपोहम्।।
अध्यात्मस्वरूपोहम्। सर्वज्ञ स्वरूपोहम्।।
परमात्म स्वरूपोहम्। सिद्धार्थ स्वरूपोहम्।।
आनन्द स्वरूपोहम्। भव्यार्थ स्वरूपोहम्।।
चिन्मय चिद्रूपोहम्। अव्यर्थ स्वरूपोहम्।।
अरहंत स्वरूपोहम्। भगवंत स्वरूपोहम्।।
कैवल्यस्वरूपोहम्। परिपूर्ण स्वरूपोहम्।।

## पूजन क्रमांक – 6

# श्री बल ऋद्धिधारी पूजन

पंचम बल ऋद्धि भेद ३

सोरठा

उपादान निज देख मत निमित्त पर दृष्टि दे।
है निमित्त पर रूप उपादान निज शक्ति है।।
गुणस्थान सब जीत भव सागर से पार हो।
हो गुणथानातीत निजानन्द में मग्न रह।।

दोहा

निश्चय तप का विषय है कारण शुद्ध पर्याय।
है स्वभाव पर्याय ही कार्य शुद्ध पर्याय।।

वीरछन्द

बल सुऋद्धि के तीन भेद हैं मनबल वचन काम बल श्रेष्ठ।
इनके धारी मुनिवर पूजूं तजदूं पर विभाव सब नेष्ठ।।
पूर्ण ज्ञान साम्राज्य प्राप्ति का एकमात्र है प्रभु उद्देश।
रत्नत्रय की पावन तरणी पाऊं धार दिगम्बर वेश।।
अकषायी स्वभाव के द्वारा अब तो करूं कषाय अभाव।
बल अनन्त प्रगटाऊं स्वामी प्राप्त करूं जिन शुद्ध स्वभाव।।
अर्घ्य चढाऊं नाचूं गाऊं विनयभाव से बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान रचाऊं लूं सम्यक चारित्र अपार।।
फिर स्वभाव को लक्ष बनाकर मोक्षमार्ग पर आजाऊं।
सिद्धशिला सिंहासन पाकर सादि अनन्त सौख्य पाऊं।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

### स्थापना

छंद–दोहा

स्वामी हैं बल ऋद्धि के निर्ग्रंथेश महान।
बल अनन्त को प्राप्तकर पाऊं पद निर्वाण।।

*ॐ ह्रीं श्री त्रयभेद बल ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।*
*ॐ ह्रीं श्री त्रयभेद बल ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।*
*ॐ ह्रीं श्री त्रयभेद बल ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सिन्निधिकरणम्।*

## अष्टक

छंद–चामर

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव जन्म मरण से रहित।
ज्ञान नीर का प्रभाव पूर्ण मोक्ष सुख सहित।।
पूर्ण बल ऋद्धि के धनी ऋषीय धन्य हैं।
विभाव से तो भिन्न हैं स्वभाग से अनन्य हैं।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव ज्ञान चंदन प्रताप।
नहीं इसमें कहीं लेश संसार ताप।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक सदा अभेद है अखंड है।
सहज अक्षय स्वरूप ज्योति निज प्रचंड है।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव की सुगंध शिवमयी।
काम व्याधि से विहीन ज्ञान रूप भव जयी।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव तृप्ति का अपूर्व स्रोत।
क्षुधा व्याधि नाश करूं ज्ञान से हो ओतप्रोत।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव द्रव्य दृष्टि से विशाल।
मोह अंधकार जयी ध्रौव्य शाश्वत त्रिकाल।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव ध्यान धूप से प्रसिद्ध।
अष्टकर्म नाशकर हो गए अनंत सिद्ध।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव का सुफल महान है।
पूर्ण मोक्ष फल प्रदाय श्रेष्ठ है प्रधान है।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्ध ज्ञायक स्वभाव का अपूर्व अर्घ्य लूं।
पूर्णता का लक्ष्य ले महान पद अनर्घ्य लूं।। पूर्ण बल.।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## अर्घ्यावलि

### 1. मनबल ऋद्धिधारी

छन्द–वीर

मनबल ऋद्धिधारिको पूरा द्वादशांग अक्षर श्रुतज्ञान।
इक अक्षर कम अर्थ विचारें इक मुहूर्त्त में पूरा जान।।
बलसुऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं लूं रत्नत्रय का आधार।।

*ॐ ह्रीं श्री मनोबल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 2. वचनबल ऋद्धिधारी

ऋद्धि वचन बल धारी पढ़ते द्वादशांग सस्वर बिन खेद।
इक मुहूर्त्त में स्वर व्यंजन मात्रादि शुद्ध पढ़ते बिन स्वेद।।
बलसुऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं लूं रत्नत्रय का आधार।।

*ॐ ह्रीं श्री वचनबल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 3. कायबल ऋद्धिधारी

ऋद्धि काय बल धारी अविचल कायोत्सर्ग करें इक वर्ष।
लघु अंगुली से तीन लोक को ऊंचा नीचा करें सहर्ष।।
बलसुऋद्धिधारी मुनियों को नमन करूँ मैं बारंबार।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ लूं रत्नत्रय का आधार।।

*ॐ ह्रीं श्री कायबल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

दोहा

रत्नत्रय की प्राप्ति का सुफल भेद विज्ञान।
इसी ज्ञान की शक्ति से मिलता पद निर्वाण।।

छंद–मत्त सवैया

बिन भेदज्ञान सम्यक्दर्शन या सम्यक्ज्ञान नहीं होता।
सम्यक् चारित्र कहां से हो जब तक निज भान नहीं होता।।
निज आत्मतत्त्व श्रद्धा के बिन उर में श्रद्धान नहीं होता।
जितना है पास उधार ज्ञान उससे कल्याण नहीं होता।।

जब हो स्वभाव की ओर दृष्टि तब ही कहलाता है ज्ञानी।
तब मोक्ष मार्ग मिल जाता है हो जाता निजपर विज्ञानी।।
हो अंतरंग बहिरंग दशा निर्मल निरपेक्ष सहज पावन।
अपने स्वरूप का निर्णय ही परिपूर्ण महान हृदय भावन।।
तनमन वाणी पर द्रव्य सभी अनुकूल नहीं प्रतिकूल नहीं।
समभावी शुद्धस्वभावी के आश्रय बिन भवदधि कूल नहीं।।
सर्वांग बहिर्मुखता तजकर अंतर्मुख हो जा अरे जीव।
प्रत्यक्ष आत्मदर्शन करके आनंद अतीन्द्रिय पा सदीव।।
तू ही ज्ञाता तू ही दृष्टा संकल्प विकल्पों से विहीन।
अरिहंत स्वयं सर्वज्ञ स्वयं चैतन्य स्वयं निज में प्रवीण।।
यह भेद ज्ञान विज्ञान शक्ति तेरे स्वभाव में भरी पूर्ण।
तू तो अनन्त गुण का समुद्र कर सकता है वसु कर्म चूर्ण।।

सोरठा

निर्विकल्प निरूपाधि निर्मल मोक्ष स्वरूप है।
द्रव्यभाव नो कर्म विरहित आत्मोत्पन्न सुख।।

दोहा

भेदज्ञान विज्ञान की कला परम उत्कृष्ट।
यही मोक्ष का मूल है जग में सर्वोत्कृष्ट।।

*ॐ ह्रीं श्री बल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीरछंद

लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञानभाव की परमशक्ति से पाऊँ वीतराग-विज्ञान।।
सिद्ध स्वपर की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुवज्ञायक की महिमा द्वारा पाऊँ वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

## पूजन क्रमांक – 7

# श्री औषधि ऋद्धिधारी पूजन

षष्ट औषधि ऋद्धि भेद ८

सोरठा

परिषह हैं बाईस बाधक तेरे ध्यान में।
इन्हें जीत चुपचाप आत्म ध्यान तल्लीन रह।।
उपसर्गों को जीत निज स्वरूप की शक्ति से।
तू मत्युंजय रूप अभ्यंकर सर्वेश है।।

दोहा

पज्जय मूढ़ा पर समय ही भटका संसार।
द्रव्य दृष्टि जो हो गया वही हुआ भवपार।।
सकल विमल परमात्मा सहज भाव चित्शक्ति।
मोहनाश करती सहज रत्नत्रय की भक्ति।।

छन्द–तांटक

औषधि ऋद्धि सुआठ भेद हैं पाते ऋषि मुनि यति ध्यानी।
आमौंषधि जल्लौषधि क्ष्वेल मलौषधि सर्वौषधि ज्ञानी।।
तथा विडौषधि मुखनिर्विष अरु निर्विषदृष्टि ऋद्धिधारी।
विनय पूर्वक सादर वंदू जय जय ऋषि मुनि गुणधारी।।
मंत्र तंत्र का कुचक्र छोडूं पाऊं आत्मज्ञान का मंत्र।
इसी मंत्र के शुद्ध जाप से प्राणी होते पूर्ण स्वतंत्र।।
अर्घ्यं चढ़ाऊं भक्ति भाव से नाचूं गाऊं हर्षित मन।
चौंसठ ऋद्धि विधान रचाऊं पाऊं मैं रत्नत्रय धन।।
फिर स्वभाव को लक्ष्य बनाकर मोक्षमार्ग पर आजाऊं।
सिद्धशिला सिंहासन पर जा सादि अनंतसौख्य पाऊं।।

सोरठा

निज अंतर में राम जब चाहे तब देख ले।
निज में कर विश्राम आस्रव लंका को जला।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

## स्थापना

दोहा

पूजूं औषधि ऋद्धि के धारी श्री ऋषिराज।
भाव द्रव्य मय श्रमण बन पाऊं निजपद राज।।

*ॐ ह्रीं श्री अष्ट भेद युत औषधि ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।*
*ॐ ह्रीं श्री अष्ट भेद युत औषधि ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।*
*ॐ ह्रीं श्री अष्ट भेद युत औषधि ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सिन्निधिकरणम्।*

## अष्टक

छंद–अवतार

प्रासुक जल शुद्ध पवित्र सरिता का लाऊं।
जन्मादि रोग कर नाश निज पद प्रगटाऊं।।
औषधि सुऋद्धि के नाथ मुनिवर सदा जजूं।
भव कष्ट विनाशन हेतु मैं दिनरात भजूं।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

शीलत चंदन की गंध दिव्य सुवासमयी।
भव व्याधि निवारक दिव्य ज्ञान प्रकाशमयी।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।*

अक्षय पद करो प्रदान अक्षत भेंट करूं।
संपूर्ण विभावी भाव मटियामेंट करूं।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।*

पुष्पों के पुन्ज प्रसिद्ध नयन मनोहारी।
हो कामवाण विध्वंस होऊं अविकारी।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

रसमय चरू चरण चढ़ाय क्षुधा व्याधि नाशूं।
पा पूर्ण तृप्ति हे नाथ शिवपदपरकाशूं।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

दीपक की ज्योति प्रसिद्ध तिमिर विनाशक है।
मोहान्धकार हो नष्ट ज्ञान प्रकाशक है।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।*

यह शुक्ल ध्यान की धूप अविकल्पी लाऊं।
कर अष्ट कर्म का नाश निजप्रभुता पाऊं।। औ.।।
औषधि सुऋद्धि के नाथ मुनिवर सदा जजूं।
भव कष्ट विनाशन हेतु मैं दिनरात भजूं।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

नयनाभिराम फल लाय चरण चढ़ाऊं मैं।
फलमोक्ष प्राप्ति के हेतु साहस लाऊं मैं।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

वसुविधि से अर्घ्य सजाय मुनिवर गुण गाऊं।
पाऊं अनर्घ्य पद नाथ निजवैभव पाऊं।। औ.।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## अर्घ्यावलि

छंद–तांटक

### 1. आर्मौषधि ऋद्धिधारी

ऋद्धि आर्मौषधि के धारी रोगी जन का कष्ट हरें।
मुनि पद रज लगते ही रोगी स्वस्थ बनें जयकार करें।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री आर्मौषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 2. जल्लौषधि ऋद्धिधारी

जल्लौषधि सु ऋद्धिधारि मुनि के तन का यदि स्वेद लगे।
तत्क्षण ही व्याधियां नष्ट हों ऐसा सोया भाग्य जगे।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री जल्लौषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

### 3. क्ष्वेल औषधि ऋद्धिधारी

ऋद्धि क्ष्वेल औषधि धारी मुनि के मुख का यदि थूक लगे।
चाहे जैसा हो असाध्य वह रोग निमिष में पूर्ण भगे।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री क्ष्वेल ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 4. मल्लौषधि ऋद्धिधारी

मल्लौषधि सुऋद्धिधारी मुनि करते हैं निज में ही वास।
कर्ण दंत नासिका अंग मल मैल व्याधि हर्त्ता गुणराश।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री मल्लौषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 5. विडौषधि ऋद्धिधारी

ऋद्धि विडौषधि धारि महामुनि करते आत्म स्वरूप विचार।
विष्टा मूत्र वीर्य मललगते ही हो सकल व्याधि परिहार।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री विडौषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 6. सर्वौषधि ऋद्धिधारी

सर्वौषधि सुऋद्धि धारि मुनि तन की पवन परम हितकार।
लगते ही विष व्याधि आदि भय क्षय हो जाते भली प्रकार।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री सर्वौषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 7. आस्य विषौषधि ऋद्धिधारी

आस्य विषौषधि ऋद्धिधारि मुनि लख विष अमृत हो जाता।
मूर्छित प्राणी निर्विष होता श्री मुनिवर के गुण गाता।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री आस्य विषौषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 8. दृष्टि विषौषधि ऋद्धिधारी

दृष्टि विषौषधि ऋद्धि धारि मुनि अवलोकन से विष हो दूर।
सर्व दृष्टि विष सर्पादिक विष दृष्टि मिलाते होता चूर।।
औषधि ऋद्धिधारि मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ पाऊं सम्यक् रत्नत्रय धन।।

*ॐ ह्रीं श्री दृष्टि विषौषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

दोहा

पर्यायार्थिक चक्षु को बंद करो तत्काल।
द्रव्यदृष्टि से देखिए अपना रूप विशाल।
निर्मल चार अभाव का कीजे सम्यक् ज्ञान।
गत आगत का मोह तज करो आत्म कल्याण।।

छंद–तांटक

चार अभाव नहीं जाने तो भव अभाव कैसे होगा।
परम पारिणामिक स्वभाव की निज स्वभाव कैसे होगा।।
प्राक् अभाव समझना होगा पूर्वकाल चिन्ता तज कर।
अरु प्रध्वंस अभाव समझना होगा भावी भय क्षय कर।।
पुद्गल की पर्याय एक दूजे का इसमें पूर्ण अभाव।
यह अन्योन्या भाव बताता पृथक-पृथक है सबका भाव।।
अरु अत्यंताभाव बताता सभी द्रव्य जग के स्वाधीन।
एक दूसरे से सदैव ही भिन्न स्वतंत्र सु निज आधीन।।
इन चारों अभाव को जानो निज स्वभाव को पहिचानो।
निज स्वभाव का आश्रय लेकर अपना सिद्ध स्वपद मानो।।
इन्द्रिय ज्ञानाधीन अवस्था का पूरा अभाव होगा।
आत्मज्ञान परिपूर्ण अतीन्द्रिय शिवमय निज स्वभाव होगा।।
इन्द्रिय ज्ञान परालंबी ज्ञेयानुसार होता परिणत।
बंध हेतु निज से विरुद्ध है ज्ञान भाव से है विरहित।।
स्वपर प्रकाशक ज्ञान स्वभावी ज्ञान शरीरी महिमावान।
इसके द्वारा स्वयं प्रगट होता है पूर्ण अतीन्द्रिय ज्ञान।।

दोहा

जग अनित्य अशरण अशुभ आश्रव मय दुखदाय।
कर्म बंधके नाशका कुछ तो करो उपाय।।

*ॐ ह्रीं श्री औषधि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीरछंद

लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञानभाव की परमशक्ति से करूँ आत्मा का कल्याण।।
सिद्ध स्वपर की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुवज्ञायक की महिमा द्वारा पाऊँ वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी।
हरषि-हरषि बहु गरजि-गरजि के मिथ्या तपन हरी।।टेक।।
सरधा भूमि सुहावनि लागे संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवरभरि उमड़े समुझि पवन सियरी।।1।।
स्याद्वाद नय बिजली चमके परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के हृदय सु-भक्ति भरी।।2।।
जप-तप परमानन्द बढ़यो है, सुखमय नींव धरी।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी।।3।।

## पूजन क्रमांक – 8

# श्री रस ऋद्धिधारी पूजन

सप्तम रस ऋद्धि भेद ६

सोरठा

परम अतीन्द्रिय रूप अनुभव गम्य अपूर्व है।
ध्रुवज्ञायक चिद्रूप सबका सबके पास है।।
षट्लेश्या दुख रूप चौ कषाय की उपज है।
लेश्याएं कर क्षीण वीतराग पद पाइए।।

दोहा

निश्चय अरु व्यवहार का जानों सत्य स्वरूप।
निश्चय का आधार लो हे चेतन चिद्रूप।।

छन्द–तांटक

रस सु ऋद्धि के छहों भेद को पाते हैं मुनिवर ध्यानी।
आशीविष अरु महादृष्टि विष तथा क्षीर स्रावी ज्ञानी।।
मधु स्रावी अमृत स्रावी घृत स्रावी ऋद्धि प्राप्त मुनिराज।
सविनय चरण कमल मैं वन्दूं स्वामी अपने हित के काज।।
कर्मोपाधि विहीन आत्मा वर्ण गंध रस स्पर्श रहित।
जड़ पुद्गल तन मन वाणी से पूर्ण भिन्न है ज्ञान सहित।।
अर्घ्य चढ़ाऊं नाचूं गाऊं भक्तिभाव से हर्षाऊं।
चौंसठ ऋद्धिविधान रचाऊं भेदज्ञान निधि प्रगटाऊं।।
फिर स्वभाव साधन के द्वारा मोक्षमार्ग पर आ जाऊं।
सिद्धिशिला सिंहासन पाकर सादि अनंत सौख्य पाऊं।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

### स्थापना

दोहा

पूजूं मैं रस ऋद्धि के स्वामी जिन मुनि नाथ।
बार बार वंदन करूं मैं भी बनूं सनाथ।।

*ॐ ह्रीं श्री षटभेद रस ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।*
*ॐ ह्रीं श्री षटभेद रस ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।*
*ॐ ह्रीं श्री षटभेद रस ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सिन्निधिकरणम्।*

## अष्टक

छंद–रेखता

नीर प्रासुक चढ़ाऊ मैं। शुद्ध निज ध्यान ध्याऊं मैं।।
प्रभोरस ऋद्धि के धारी। ध्यान में लीन अविकारी।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

मलय चंदन सुगंधित है। भवातप नाश निश्चित है।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।*

सहज अक्षत बनाऊं मैं। स्वपद अक्षयसुपाऊं मैं।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।*

पुष्प की गंध है अनुपम। वासना काम की हो कम।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

सुचरु रस पूर्ण लाऊं मैं। क्षुधा पीड़ा मिटाऊं मैं।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

दीप की ज्योति शुभ लाऊं। मोहतम जीत मैं जाऊं।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।*

धूप दश धर्म मय लाऊं। कर्म का दोष विघटाऊं।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

सुफल निज भाव के लाऊं। मोक्ष फल पूर्ण प्रगटाऊं।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

अर्घ्य वसु द्रव्य का लाऊं। परम ज्ञायक स्वपद पाऊं।। प्रभो.।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## अर्घ्यावलि

### 1. आस्य विषौषधि रस ऋद्धिधारी

वीर

आशीविष रस ऋद्धि धारि मुनि क्रोध सहित यदि कहें वचन।
उस प्राणी का उसी समय हो जाता है तत्काल मरण।।
रस सुऋद्धि धारी मुनियों को विनय सहित मैं करूँ नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूँ मैं निज स्वरूप में करूं रमण।।

*ॐ ह्रीं श्री आशीविष रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 2. दृष्टि विष रस ऋद्धिधारी

ऋद्धिदृष्टि विष रस धारी मुनि वक्र दृष्टि से लें यदि देख।
तत्क्षण गही गिर कर मर जावे ऐसा ही होता विधि लेख।। रस.।।

*ॐ ह्रीं श्री दृष्टि विष रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 3. क्षीर स्रावी रस ऋद्धिधारी

ऋद्धि क्षीर स्रावी रस धारी क्षीर रहित जो करें अहार।
वह आहार क्षीर हो जाए तन हो पुष्ट किन्तु अविकार।। रस.।।

*ॐ ह्रीं श्री क्षीर स्रावी रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 4. मधुस्रावी रस ऋद्धिधारी

मधुस्रावी रस ऋद्धिधारि मुनि मिष्ट रहित लें शुष्क आहार।
मिष्ट बने आहार स्वयं ही मुनिवर महिमा अपरंपार।। रस.।।

*ॐ ह्रीं श्री मधुस्रावी रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 5. सर्पिस्रावी रस ऋद्धिधारी

सर्पि स्रावि रस धारी मुनिवर घृतविहीन जब लें आहार।
तत्क्षण वह घृतमय हो जावे ऋषिवर महिमा अगम अपार।। रस.।।

*ॐ ह्रीं श्री सर्पिस्रावी रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 6. अमृतस्रावी रस ऋद्धिधारी

ऋद्धि अमृत स्रावी रस धारी विष मिश्रित जब ले आहार।
अमृत समान बने तत्क्षण ही क्षय हो जाता सर्व विकार।। रस.।।

*ॐ ह्रीं श्री अमृतस्रावी रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

छंद–दोहा

तीन काल त्रयलोक में महा मोक्ष का मंत्र।
एकमात्र शुद्धात्म का आश्रय सुख का तंत्र।।
ज्ञानस्वभावी आत्मा समदर्शी सम दृष्टि।
सम भावों से हो सदा समता रस की वृष्टि।।

छंद–मत्त सवैया

चैतन्य स्वभाव भाव के बिन संयम का लेश महत्व नहीं।
जब तक स्वभाव का भान नहीं तब तक किंचित सिद्धत्व नहीं।।

सिद्धत्व प्राप्त करना है तो अपने स्वभाव की ओर देख।
मरकर भी कौतुहल से ही अपने स्वरूप को शुद्ध लेख।।
बस इतना ही तो करना है आश्रय में ले निज ध्रुव विशाल।
अंतर्मुहूर्त्त में ही होगा कैवल्य ज्ञान शाश्वत त्रिकाल।।
त्रैलोक्य शिरोमणि त्रिभुवनपति मंगलदायी मंगल स्वरूप।।
परिपूर्ण ज्ञान चेतना सिंधु चैतन्य राज निर्मल अनूप।।
यदि भेद ज्ञान की कला नहीं तो संयम भी सम्पूर्ण व्यर्थ।
बहिरंग शुद्धि सम्पूर्ण व्यर्थ तू अंतरंग का समझ अर्थ।।
बहिरात्मरूप तज अंतरात्मा बन कर निज की ओर देख।
अपने भीतर परमात्म तत्व परिपूर्ण शुद्ध स्वयमेव लेख।।
पुरुषार्थ सिद्धिका कर उपाय अव्यर्थ इसी का आश्रय ले।।
अपने ज्ञायक ध्रुव की महिमा अपने अंतर में निश्चय ले।।
स्वात्मानुभूति ही परम पारिणामिक स्वभाव की परम शक्ति।
परिपूर्ण मोक्ष सुख की दाता रत्नत्रय की यह विमल भक्ति।।

दोहा

ज्ञानानंदस्वरूप की महिमा अपरंपार।
सब जीवों के पास है परम शुद्ध अविकार।।

*ॐ ह्रीं श्री रस ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीरछंद

लौकिक ऋद्धिसिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञान भाव की परम शक्ति से करूँ आत्मा का कल्याण।।
सिद्धस्वपर की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुवज्ञायक की महिमा द्वारा पाऊँ वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

यह आग राग दहै सदा, तातैं समामृत सेइये।
चिर भजे विषय-कषाय अब तो, त्याग निजपद बेइये।।

## पूजन क्रमांक – 9

# श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी पूजन

अष्टम क्षेत्र ऋद्धि भेद – २

सोरठा

चारों गति के मध्य घोर अनंतों कष्ट हैं।
पंचमगति सुखरूप पाना ही पुरुषार्थ है।।
नव पदार्थ में मुख्य अपना आत्म पदार्थ है।
यही एक परमार्थ शुद्ध मोक्ष का हेतु है।।

दोहा

सामायिक से हो सदा समभावों की आय।
उज्ज्वल पंच प्रकार की सामायिक शिवदाय।।

वीरछन्द

क्षेत्र ऋद्धि के उत्तम दोनों भेद प्राप्त करते मुनिराज।
इक अक्षीण महानस इक अक्षीण महालय स्वतः विराज।।
जो स्वरूप से च्युत हो जाते वे भव सागर में बहते।
वे ही मोक्ष संपदा पाते जो स्वरूप में रत रहते।।
भव तारिणि शिवतरणी पायी भवतरणी दुक रूपी त्याग।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र मय स्वानुभूति से कर अनुराग।।
अर्घ्य चढ़ाऊं विनय भाव से नाचूं गाऊ हर्षाऊं।
चौसठ ऋद्धि विधान रचाऊं उत्तम सम्यक् तप पाऊं।।
फिर स्वभाव साधन के द्वारा मोक्ष मार्ग पर आ जाऊं।
सिद्धशिला सिंहासन पर जा सादि अनंत सौख्य पाऊं।।

दोहा

आत्म ज्ञान को छोड़कर सभी कार्य भवरूप।
निश्चय पूर्वक ध्याइये अपना शुद्ध स्वरूप।।

*पुष्पांजलिंक्षिपेत्*

## स्थापना

दोहा

क्षेत्र ऋद्धिधारी सुमुनि वीतराग निर्ग्रंथ।
बंध भाव को नष्ट कर हो ! शिवतिय कंत।।

*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।*
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।*
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी सर्वऋषि समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सिन्निधिकरणम्।*

## अष्टक

छंद–पद्धटिका

अति प्रासुक निर्मल नीर लाय। जन्मादि रोग पीड़ा नशाय।।
मुनि क्षेत्र ऋद्धि धारी प्रसिद्ध। हो जाते है अरहंत सिद्ध।।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

चंदन हरता जड़ देह ताप। तुम हरते हो संसार ताप। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।*

दो प्रभु अक्षत के धवल पुंज। अक्षय अखंड शिव सुख निकुन्ज। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्धात्म पुष्प की श्रेष्ठ गंध। कामादि भाव नाशक अबंध। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्धात्म भाव नैवेद्य लेश। है क्षुधा व्याधि नाशक महेश। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

शुद्धात्म दीप ले ज्योति वान। अज्ञान तिमिर हर लूं महान। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।*

यह ध्यान धूप आनंद दाय। कर्मो का क्षय शिव सुख प्रदाय। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

कल्पद्रुम फल जग में प्रधान। दो शुद्ध मोक्ष पदवी महान। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

लूं शुद्ध भाव मय अर्घ्य सार। दो प्रभु अनर्घ्यपद भव निवार। मुनि.।
*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## अर्घ्यावली

### 1. क्षेत्र (अक्षीण) महानस ऋद्धिधारी

वीरछंद

ऋद्धि क्षेत्र अक्षीण महानस धारी जब करते आहार।
चक्रवर्त्ति की सेना उस दिन जीमे तो न घटे आहार।।
मैं अक्षीण ऋद्धि के धारी मुनिवर सादर करूं नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं सम्यक् तप कर आराधन।।
*ॐ ह्रीं श्री अक्षीण महानस क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## 2. क्षेत्र अक्षीण महालयधारी

ऋद्धि क्षेत्र अक्षीण महालय धारी मुन चौहस्त प्रमाण।
जित बैठें तित इन्द्र चक्रवर्ती ससैन्य भी बैठें आन।।
मैं अक्षीण ऋद्धि के धारी मुनिवर सादर क़रूं नमन।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं मैं सम्यक् तप कर आराधन।।

*ॐ ह्रीं श्री अक्षीण महालय क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## जयमाला

सोरठा

निज चैतन्याकार चिदानंद चिद्रूपका।
हो कैवल्य प्रकाश पूर्ण चन्द्र के लक्ष से।।
हर लेती अज्ञान ज्ञानांजन की रेख इक।
कर देती अवसान मोह क्षोभ संपूर्णतः।।

छंद–चौपई

जिन मंदिर के भीतर जाय। अंग अंग फूला न समाय।
श्री जिनवर के दर्शन पाय। रोम रोम पुलकित हो जाय।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाय। सर्व पाप मल तुरत विलाय।
दर्शन मोह तुरन्त नशाय। भेद ज्ञान की निधि दर्शाय।।
जिन मंदिर में श्री जिनराज। तन मंदिर में चेतन राज।
समकित पूर्वक अविरति जाय। चरित मोह निर्बल हो जाय।।
क्षय प्रमाद से मिटे कषाय। केवल ज्ञान प्रगट हो जाय।
महा मोक्ष फल मंगलदाय। सिद्ध स्वपद घर बैठे आय।।
इन्द्रादिक सुर वन्दन आय। सादर सविनय शीष झुकाय।।
संयम भाव प्रतीति जगाय। मानव तन पाए शिवदाय।।
अज्ञानी तज दें अज्ञान। ज्ञानी जन पाएं निर्वाण।।
जिन दर्शन लौकिक सुखदाय। निज दर्शन शिव सौख्य प्रदाय।।
मिथ्या विभ्रम पूर्ण मिटाय। यही मुक्ति का श्रेष्ठ उपाय।।
मैं भी ऐसा करूं उपाय। निज चेतन का दर्शन पाय।।
सम्यक् दर्शन शिव सुखरूप। सम्यक् ज्ञान सहज अनुरूप।।

सोरठा

पंच समिति त्रयगुप्ति पंच महाव्रत धारिये।
निज स्वभाव का घात छोड़ आत्मा ध्याइये।।

*ॐ ह्रीं श्री क्षेत्र ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

वीरछंद

लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञान भाव की परम शक्ति से करूँ आत्मा का कल्याण।।
सिद्ध स्वपद की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुव ज्ञायक की महिमा द्वारा पाऊँ वीतराग विज्ञान।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

करलो जिनवर का गुणगान, आई सुखद घड़ी।
आई सफल घड़ी, देखो मंगल घड़ी।। टेक।।
वीतराग का दर्शन पूजन भव-भव को सुखकारी।
जिन प्रतिमा की प्यारी छबि लख मैं जाऊँ बलिहारी।। 1।।
तीर्थंकर सर्वज्ञ हितंकर महा मोक्ष के दाता।
जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता।। 2।।
प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते।
धर्मध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते।। 3।।
सम्यग्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता।
रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता।। 4।।
निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती।
निजस्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती।। 5।।

## अंतिम महाअर्घ्यः

सोरठा

हैं पच्चीस कषाय दुखदायी विद्रूप अति।
इनका कीजे नाश आत्म बोधि के शस्त्र से।।

वीरछंद

ये उपरोक्त ऋद्धियां चौंसठ स्वतः तपस्या बल अनुसार।
हो जाती हैं प्रगट स्वयं ही फिर भी मुनि रहते अविकार।।
केवलज्ञान ऋद्धि होती है केवल केवल ज्ञानी को।
शेष ऋद्धियां हो जाती हैं तपो शक्ति से ध्यानी को।।
ऋद्धि लोभ से अगर तपस्या करते संसारी प्राणी।
अवहेलना मोक्षमार्ग की करते ऐसे अज्ञानी।।
जिस तप का फल महामोक्ष है उसका दुरुपयोग करते।
पुण्य भाव के पड़ कुचक्र में निज शुद्धोपयोग हरते।।
तुष पर मोहित होकर तंदुल जैसे तज देता है मूढ़।
ऐसे ही अज्ञानी शिव पथ तज भव पर होता आरूढ़।।
वीतराग तप के अधिकारी एकमात्र निश्चय ज्ञानी।
उनको ही ऋद्धियां स्वतः प्रगटित हो जातीं सुखदानी।।
फिर भी तन साता के हेतु नहीं करते प्रयोग किंचित्।
धर्म कार्य के लिए करें तो भी लेते हैं प्रायश्चित।।
विष्णु कुमार महामुनि ने भी किया विक्रिया का उपयोग।
कर प्रभावना प्रायश्चित ले पुनः लिया मुनिपद का योग।।
महाअर्घ्यं अर्पित करता हूँ विनय भाव से तुम्हें मुनेश।
बाह्यान्तर निर्ग्रंथ बनूं मैं किंचित भी हो राग न द्वेष।।
पूर्ण वीतरागी बनने को निज स्वभाव ही ध्याऊं मैं।
पर द्रव्यों की शरण छोड़ शुद्धात्म शरण ही पाऊं मैं।।
चौंसठ ऋद्धि विधान करूं सम्यक् चारित्र धरूं।
निज अनुभव रस पान करूं प्रभु जीवन सफल पवित्र करूं।।

दोहा

ऋद्धि सिद्धिके लोभ से जो करते पुरुषार्थ।
उनका हो सकता नहीं कभी सिद्ध परमार्थ।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुषष्टि ऋद्धिधारी सर्व ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## महा जयमाला

छन्द–कुन्डलिया

चौंसठ ऋद्धि विधान का एकमात्र उद्देश्य।
श्रमण साधु मुनि बन सहज निज में करूं प्रवेश।।
निज में करूं प्रवेश त्वरित निजको ही ध्याऊं।
परम तपस्यावी होकर निज वैभव पाऊं।।
शुभ या अशुभ विभाव भाव सम्पूर्ण क्रूर हठ।
प्रगट ऋद्धियां होती इनके क्षय से चौंसठ।।

छंद–मौक्तिक दाम

प्रभावी चौंसठ ऋद्धि महान। प्राप्त करते तप से गुणवान।।
आत्म कल्याण भावना पूर्ण। अष्ट कर्मों को करते चूर्ण।।
विभावी भावों का कर नाश। प्रगट करते कैवल्य प्रकाश।।
सकल जग का करते कल्याण। शीघ्र पाते हैं पद निर्वाण।।
पूर्व में मिथ्या भ्रम कर नाश। किया सम्यक्त्व स्वरूप विकास।।
प्रगट कर उर में सम्यक् ज्ञान। लिया सम्यक्चारित्र महान।।
पूर्ण संयम का लेकर साज। हो गए अप्रमत्त मुनिराज।।
ऋद्धियां स्वतः हो गई प्राप्त। शक्ति उनकी कर उर में व्याप्त।।
किन्तु ऋषिराज ध्यान में लीन। सर्वदा शुक्ल ध्यान तल्लीन।।
नहीं उनके प्रयोग का ध्यान। मिला समभावी स्वर्ण विहान।।
सदा ही शुद्ध भाव का साथ। महामुनि परम ज्ञानपति नाथ।।
कषायों का मद कर चकचूर। हुए हैं शुद्ध भाव में शूर।।
लिया आश्रय, में निज भूतार्थ। किया है सकल सिद्ध परमार्थ।।
इसी पथपर मैं चलूं सुनाथ। न छोडूं कभी चरण तुवसाथ।।
आप जैसी मैं पाऊं शक्ति। हृदयचैतन्य राज की भक्ति।।
विनय है यही महा मुनिराज। सफल हों मेरे सारे काज।।

परम पद पाऊं मैं निर्वाण। सफल हो नर पर्याय महान।।
चरण में नाथ चढ़ाऊं अर्घ्य। प्राप्त हो निर्मल स्वपद अनर्घ्य।।
आपके पथ पर चलूं सदैव। भाव से पूजन की अतएव।।
तुम्हें है वन्दन बारंबार। हरूं प्रभु यह दुखमय संसार।।

*ॐ ह्रीं श्री चतुषष्ठि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## आशीर्वाद

रोला

पुत्र पौत्र धन धान्य आदि की नहीं कामना है स्वामी।
इन्द्र चक्रवर्ती पद की भी नहीं याचना है स्वामी।।
एकमात्र भावना यही है सुन लो हे अंतर्यामी।
निज स्वरूप से परिचय करके बन जाऊं शिव पथ गामी।।
लौकिक ऋद्धि सिद्धि की इच्छाओं का कर डालूँ अवसान।
ज्ञान भाव की परम शक्ति से पाऊं वीतराग विज्ञान।।
सिद्ध स्वपद की ऋद्धि प्राप्त करने का है उद्देश्य महान।
ध्रुवज्ञायक स्वभाव के द्वारा पाऊँ अपना पद निर्वाण।।

दोहा

चौंसठ ऋद्धि विधान को जो करते धर ध्यान।
रत्नत्रय की भक्ति से पाते पद निर्वाण।
लौकिक संकट दूर हों कट जाएं भव बंध।
परम अतीन्द्रिय सुख मिले हों सब जीव अबंध।।

*इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

*जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं श्री चतुषष्ठि ऋद्धिधारी ऋषिवरेभ्यो नमः।*

## शान्ति पाठ

गीतिका

वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर। परम शान्ति दाता परमेश्वर।।
गणधर देव ऋषीष मुनीश्वर। पूर्ण शान्ति सागर जगदीश्वर।।
जिन गुण संपत्ति पाऊं स्वामी। तुम समान वन अंतर्यामी।।
सदा मिले जिन वृष की छाया। शुद्धभाव निज उरको भाया।।
प्राणि मात्र प्रभु के प्रताप से। सुखी बनें रह दूर पाप से।।

विश्व सुखी हो राष्ट्र सुखी हो। देश सुखी हो प्रान्त सुखी हो।।
नगर सुखी हो ग्राम सुखी हो। सर्व जगत के जीव सुखी हों।।
शासन हो धार्मिक बलशाली। न्याय नीति की हो उजियाली।।
ईति भीति दुख हो न लेश भी। नहीं महामारी न क्लेश भी।।
वर्षा उचित समय पर हो प्रभु। वातावरण न दुख कर हो विभु।।
हिंसा झूठ कुशील परिग्रह। चोरी पापादिक जाएं ढह।।
व्यसन न कोई छूने पाएं। धर्म मार्ग पर जग आ जाए।।
सब अपना कल्याण करें प्रभु। मंगलमय निर्वाण वरें प्रभु।।
आधि व्याधि पर की उपाधिसब। क्षय कर पाए निज समाधि अब।।
यही भावना हम प्रभु भाएं। मोक्ष मार्ग पर हर्षित आएं।।
दूर सकल मिथ्यात्व भ्रांति हो। भव्य शान्ति मय आत्म क्रांति हो।।
विश्व शान्ति हो महा शान्ति हो। पूर्ण शान्ति हो परम शान्ति हो।।

*नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।*

## क्षमापना

मंगल महावीर जिनस्वामी। मंगलगौतम गणधर नामी।
मंगल कुन्दकुन्द ऋषि मुनिवर। मंगल श्री जिन धर्म सौख्यकर।
श्री जिन गणधर साधु ऋषीश्वर। पूजे भाव सुमन अर्पितकर।
आव्हानन मैं नहीं जानता। सुस्थापन भी नहीं जानता।।
सन्निधिकरण नहीं मैं जानू। पूजनविधि विधान क्या जानूं।।
मैं पामर हूँ ज्ञान हीन हूँ। द्रव्य हीन हूँ क्रिया हीन हूँ।।
अगम अनन्त आपकी महिमा। परम पूज्य त्रिभूवन में गरिमा।।
भूल चूक सब क्षमा करो प्रभु। शरणागत को शरण रखो प्रभु।।

अन्त्यमंगल

मंगलं सिद्धपरमात्मा मंगलं गणधर वलय।।
मंगलं पंचपरमेष्ठी दिव्यवाणी मंगलं।।
मंगलं चैत्य चैत्यालय जैन धर्मो स्तु मंगलं।
मंगलं शुद्ध चैतन्यम आत्मधर्मोस्तु मंगलं।।

*ॐ शान्ति*

## हमारे यहां प्राप्त महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

मोक्षशास्त्र/चौबीस तीर्थंकर महापुराण
बृहद जिनवाणी संग्रह/समयसार (ज्ञायकभावप्रबोधिनि)
रत्नकरण्डश्रावकाचार/समयसार
मोक्षमार्ग प्रवचन भाग-१,२,३,४
प्रवचनसार/क्षत्रचूड़ामणि
समयसार नाटक/मोक्षमार्ग प्रकाशक
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका भाग २ (पूर्वार्द्ध + उत्तरार्द्ध) एवं भाग ३
बृहद द्रव्यसंग्रह/जिनेन्द्र अर्चना
दिव्यध्वनिसार प्रवचन/नियमसार
योगसार प्रवचन/तीनलोकमंडल विधान
समयसार कलश/चिन्तन की गहराईयाँ
प्रवचनरत्नाकर भाग १ से ११ तक
नयप्रज्ञापन/समाधितंत्र प्रवचन
पं. टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तृत्व
समयसार अनुशीलन सम्पूर्ण भाग १,२,३,४,५
आचार्य अमृतचन्द्र : व्यक्तित्व और कर्तृत्व
पंचास्तिकाय संग्रह/सिद्धचक्र विधान
ज्ञानस्वभाव ज्ञेयस्वभाव
भावदीपिका/कार्तिकेयानुप्रेक्षा
परमभावप्रकाशक नयचक्र
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय/ज्ञानगोष्ठी
सूक्तिसुधा/आत्मा ही है शरण/आत्मानुशासन
संस्कार/इन भावों का फल क्या होगा
इन्द्रध्वज विधान/धवलासार
रामकहानी/गुणस्थान विवेचन
सुखी जीवन/विचित्र महोत्सव
सर्वोदय तीर्थ
सत्य की खोज/बिखरे मोती
निर्विकल्प आत्मानुभूति के पूर्व
तीर्थंकर भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ
श्रावकधर्मप्रकाश/कल्पद्रुम विधान
वी.वि. पाठमाला भाग १,२,३
वी.वि. प्रवचन भाग १ से ६ तक
तत्त्वज्ञान तरंगणी/रत्नत्रय विधान
भक्तामर प्रवचन/बारह भावना : एक अनुशीलन
धर्म के दशलक्षण/विदाई की बेला
नवलब्धि विधान/बीस तीर्थंकर विधान

पंचमेरु नंदीश्वर विधान/रत्नत्रय विधान
सुखी होने का उपाय भाग १ से ८ तक
जैनतत्त्व परिचय/करणानुयोग परिचय
आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार
कालजयी बनारसीदास/रक्षाबन्धन और दीपावली
बालबोध भाग १,२,३/जिन खोजा तिन पाईयां
तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग १,२/आध्यात्मिक भजन संग्रह
छहढाला (सचित्र)/भ. ऋषभदेव/शीलवान सुदर्शन
प्रशिक्षण निर्देशिका/जैन विधि-विधान
क्रमबद्धपर्याय/दृष्टि का विषय/ये तो सोचा ही नहीं
बारसाणुवेक्खा/चौबीस तीर्थंकर पूजा
गागर में सागर/आप कुछ भी कहो
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
जैनधर्म की कहानियाँ भाग १ से १५ तक
अहिंसा के पथ पर/जिनवरस्य नयचक्रम्
णमोकार महामंत्र/वीतराग-विज्ञान प्रवचन भाग-५
चौसठ ऋद्धि विधान/कारणशुद्धपर्याय
दशलक्षण विधान/आचार्य कुन्दकुन्ददेव
पंचपरमेष्ठी विधान/विचार के पत्र विकार के नाम
आचार्य कुन्दकुन्द और उनके पंच परमागम
परीक्षामुख/मुक्ति का मार्ग/पश्चात्ताप
युगपुरुष कानजीस्वामी/सामान्य श्रावकाचार
अलिंगग्रहण प्रवचन/जिनधर्म प्रवेशिका
मैं कौन हूँ/सत्तास्वरूप/वीर हिमाचलतैं निकसी
समयसार : मनीषियों की दृष्टि में
व्रती श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ/पदार्थ-विज्ञान
मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ/महावीर वंदना (कैलेण्डर)
वस्तुस्वातंत्र्य/भरत-बाहुबली नाटक
शास्त्रों के अर्थ समझने की पद्धति
सुख कहाँ है/सिद्धस्वभावी ध्रुव की ऊर्ध्वता
मैं स्वयं भगवान हूँ/णमोकार एक अनुशीलन
रीति-नीति/गोली का जवाब गाली से भी नहीं
समयसार कलश पद्धानुवाद/अष्टपाहुड़
योगसार पद्धानुवाद/कुन्दकुन्दशतक पद्धानुवाद
अर्चना/शुद्धात्मशतक पद्धानुवाद
षट्कारक अनुशीलन/अपनत्व का विषय